SEMESTER - 4

EC- 1

Popular Movements

- Gender Movement

Vetted by :

प्रो० (डॉ०) सुरेंद्र कुमार

विभागाध्यक्ष, इतिहास विभाग

पटना विश्वविद्यालय, पटना

संपर्क : 09835463960

Presented by:

शिप्रा नंदन

अतिथि शिक्षक, इतिहास विभाग

पटना विश्वविद्यालय, पटना

संपर्क : 08604171178

nandan.shiprabhu@gmail.com

गांधीवादी आन्दोलन में महिलाओं की भूमिका

इतिहास में महिलाओं की भूमिका सम्बन्धी शोध कार्य न सिर्फ शोधार्थियों और इतिहासकारों के बीच बल्कि विदेशी यात्रियो,दार्शनिकों व अन्य के बीच काफी महत्वपूर्ण रहा है जिसपर समय-समय पर कार्य भी होते रहे हैं एक तरफ मिल जैसे विचारक है जो भारत आये बिना ही भारतीय संस्कृति का आलोचनात्मक विवरण लिख डालते है और इसका एकमात्र निदान अंग्रेजी शासन की भारत में सुदृढ़ता को बताते हैं वहीं इवेंजिलिकल विचारक हैं जिन्होंने भारत में महिलाओं की उपेक्षापूर्ण स्थिति के लिए भारतीय धरम को दोषी ठहराते हुए ईसाई धर्म को एकमात्र पवित्र धर्म व महिलाओं को सम्मानजनक दर्जा देने वाला धर्म घोषित करते हैं और इन विचारकों के विरोध में जो इतिहास लेखन किया गया,उसने तो प्राचीन भारत के पुरे कालखंड में ही महिलाओं की स्वर्णिम स्थिति का विवरण दिया। परन्तु वर्त्तमान समय में महिलाओं की स्थिति संतोषजनक बानी हुई है,जिसका सर्वप्रमुख कारण है,इतिहास में उनके कार्यों व योगदानों का सही मूल्याङ्कन ना होना।

भारत के स्वतंत्रता आंदोलन में असंख्य रूप में महिलाओं ने भाग लिया और आंदोलन में नए मुद्दे व मसविदे भी साथ लेकर शामिल हुईं। वह समय जब महिलाओं को सार्वजनिक स्थलों पर जाने की मनाही थी,ऐसे समय में राष्ट्रीय आंदोलन को एक धार्मिक मिशन के रूप में देखा गया,जिसमे `शक्ति` की पूजा के निहितार्थ महिलाओं को शामिल होने की अनुमति मिली। यह अनुमति कही ना कही महात्मा गाँधी की संत और देवता वाली क्षवि के कारण भी मिली,क्योकि भारतीय पुरुष अपने घर की महिलाओं की जिम्मेदारी को गाँधी के हाथ में सौप कर निश्चिन्त हो जाते थे। महात्मा गाँधी

ने महिलाओं को सम्बोधित करते हुए लगभग अपने हर भाषण में कहा कि उन्हें सीता,द्रौपदी और दमयंती के समान सात्विक,दृढ और नियंत्रित होना चाहिए,तभी पुरुषों को उन्हें देखकर प्रेरणा मिलेगी और देशप्रेम कि भावना अपने पूर्णता को प्राप्त करेगी। गाँधी ने महिलाओं को श्रम की में शामिल करने के लिए उन्हें सूत कातने,खादी के वस्त्र बनाने और विदेशी वस्त्रों का त्याग करके स्वदेशी अपनाने की सलाह दी। महात्मा गाँधी ने अपने आंदोलनों का स्वरुप `अहिंसात्मक` रखा,जिससे की महिलायें अधिकम से अधिक संख्या में भाग ले सकें।

गांधीवादी स्वरुप में जब १९२०-१९२२ का `असहयोग आंदोलन`आरम्भ हुआ तो इसमें भारी संख्या में महिलायें शामिल हुईं। सैकड़ो महिलायें खादी और चरखा बेचने गली -गली गईं। खादी को लोकप्रिय बनाने के लिए विदेशी वस्त्रों की होली जलाई गई और खादी कपड़ों को पहनने के लिए जोर दिया गया। कांग्रेस सम्मेलन में भी महिलाओं ने अपनी भागीदारी दिखाई और १९२१ के सम्मलेन में १४४ महिला प्रतिनिधियों ने भाग लिया। मुंबई में राष्ट्रीय स्त्री सभा का गठन किया गया जो की पूरी तरह महिलाओं और राष्ट्र को समर्पित था। इस संगठन ने नवम्बर १९२१ में `प्रिंस ऑफ़ वेल्स` की भारत यात्रा के विरोध में पुरे मुंबई शहर में हड़ताल आयोजित की। सभा की महिलाओं ने गाँव में बनने वाले खादी के कपड़ों को शहरों में प्रदर्शनी लागि और केंद्र खोले और उन्हें बेचा। गांधीजी की हरिजन उद्धार से प्रेरित होकर उन्होंने मुंबई में कई कक्षाएं चलाई और तिलक कोष में ४४,५१९ रुपये इकठा करके गांधीजी को दिए। वही इस आंदोलन में श्रमिक वर्ग की महिलाओं की भूमिका भी काफी महत्वपूर्ण रही। १९२० के दशक के अंत में महिलाओं हेतु श्रमिक संघ खोले गए। १९३१ में लाहौर में हुए सम्मलेन में महिलाओं हेतु

श्रमिक संघ भी खोले गए। १९३१ में लाहौर में हुए सम्मलेन में महिलाओं हेतु फ़ैक्टरिओं में एक महिला डॉक्टर प्रसूति और एक क्रेस,नर्सरी स्कूल,प्रसूति गृह आदि की व्यवस्था की मांग उठाई। इन श्रमिक महिलाओं के साथ उस स्तर पर ध्यान नहीं दिया गया जैसा कि मध्यमवर्गीय महिलाओं के साथ दिया गया था परन्तु आगे हस्तकला व खाद्य पदार्थ उद्योग आदि में श्रमिक महिलाओं के लिए स्थान सुनिश्चित किये गए।

असहयोग आंदोलन के बाद सविनय अवज्ञा आंदोलन से राष्ट्रीय आंदोलन में महिलाओं की भागीदारी का एक नया चरण शुरू हुआ। जेराल्डिन फोर्ब्स ने अपनी पुस्तक में लिखा है कि १९२० ले आंदोलन की तुलना में १९३० के आंदोलन में महिलाओं की भागीदारी संख्यात्मक और गुणात्मक दोनों ही दृष्टियों से काफी ज्यादा थी। हालाँकि दांडी यात्रा के समय गांधीजी ने महिलाओं को इसमें शामिल करने से मना कर दिया था परन्तु महिलाओं के उत्साह को देखते हुए गांधीजी को अंततः हामी भरनी पड़ी। सविनय अवज्ञा आंदोलन में महिलाओं ने नमक बनाने से लेकर नमक बेचने तक का कार्य किया। इस आंदोलन में कमला देवी चटोपाध्याय `आत्मत्यागी खेतिहर महिला` की छवि को सामने रखा। कांग्रेस की गतिविधियों का केंद्र हमेशा ही शहरी श्रमिक महिलाओं की बजाय ग्रामीण कृषक महिलायें रही,जिसके कारण जहाँ-जहाँ भी आंदोलन का स्वरुप बढ़ता गया,ग्रामीण कृषक महिलाएं भी शामिल होती गईं। अंग्रेजी सर्कार द्वारा कर और राजस्व ऐडा ना करने के एवज में कर्जदार के सामानों,भूमि की नीलामी की जाती थी। सविनय अवज्ञा में एक कार्यक्रम कर व राजस्व का बहिष्कार भी शामिल था। महिलाओं ने इन् नीलामियों का बहिष्कार शुरू कर दिया,जिसका काफी सकारात्मक असर देखने को

मिला। १९३० के आंदोलन की सफलता से घबराकर अंग्रेजी हुकूमत ने इसे हिंसात्मक तरीके से दबाना आरम्भ किया। अंग्रेजी पुलिस ने महिलाओं के साथ भी बर्बरता की,जिसकी निंदा अख़बारों,बुलेटिन,सम्मलेन आदि में की गई। महिलाएं जेल जाने से भी पीछे नहीं रही और ऐसा मना जाता है कि १९३०-१९३३ के दौरान लगभग बीस हज़ार महिला सत्याग्रही जेल भेजी गई और जेल में रहकर उन्होंने काफी यातनाएं भी झेली। महिलाओं की शिक्षा,रोजगार,बराबरी के दर्जे के लिए अनेक महिला संगठन भी १९२०-१९३० के दशक में स्थापित हुए। १९३१ में लेडीज पिकेटिंग क्लब,१९२६ में आल इंडिया विमेंस कांफ्रेंस,१९२८ में राष्ट्रीय महिला संघ आदि ने महिलाओं के हक़ और उनके अधिकार के लिए लगातार प्रयासरत रहीं।

महात्मा गाँधी के अंतिम आंदोलन `भारत छोडो` में भी महिलाओं ने अधिक से अधिक संख्या में भाग लिया। चूकि आंदोलन के आरम्भ होते ही नेतृत्वकर्ता गिरफ्तार हो चुके थे,जिसके कारण प्रत्येक आंदोलनकारी अपना नेतृत्वकर्ता स्वयं था। ऐसी स्थिति में महिलाओं ने हज़ारों की संख्या में भूमिगत होकर आंदोलन को संचालित किया। इसके अतिरिक्त सामानांतर सरकार चलाने में सहायक रहीं,कई तो गैर कानूनी कार्यों में भी भागीदार बनी। इस आंदोलन के दौरान कइयों की हत्या भी हो गई। बारीसाल में ही महिलाओं की आत्मरक्षा समितियां बनी ,जहा उन्हें पहले लाठी चलाने का प्रशिक्षण दिया जाता ताकि वे अंग्रेजों के उत्पीड़न का डटकर मुकाबला कर सकें। मैमनसिंह जिले में सामंतवाद के खिलाफ संघर्ष में महिलाओं की भूमिका की सराहना की गई। वही पटना जिले की महिलाओं ने प्रभात फेरिया निकाली और पोस्टर प्रदर्शनिया की। १९४० के दशक में ही स्वतंत्रता के आसार दिखने लगे

थे,जिसके कारण महिला आंदोलन पूरी तरह स्वतंत्रता आंदोलन में समाहित हो गया था। ऐसा अनुमान लगाया जाता था कि देश कि स्वतंत्रता के साथ ही महिलाओं कि स्थिति भी संतोषजनक हो जाएगी।

संभावित निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता है कि स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं की बढ़ती भागीदारी का श्रेय महिला संगठनों और महात्मा गाँधी को दिया जाता है। तनिका सरकार ने भी अपने लेख में लिखा है कि गाँधी एक देवदूत की तरह थे,वो जहां जाते वहां भीड़ इकठा हो जाती। हालाँकि इससे पहले सामाजिक -धार्मिक सुधारकों ने भी महिलाओं की समस्याओं को सुलझाने की कोशिश की थी,परन्तु उन्होंने महिलाओं के आत्मत्याग को जबरदस्ती का कर्मकांड बना दिया था और उनका तर्क था कि इससे हिन्दू महिलाओं की एक गौरवमयी छवि बनती है इसके विपरीत गांधी ने महिलाओं के गुणों को हिन्दू कर्मकांड से अलग रखकर उसे भारतीय नारीत्व का स्वाभाविक गुण बताया। गाँधी का कहना था कि स्त्री और पुरुष में जैविक अंतर के अनुसार उनके कार्य बटे हुए हैं परन्तु दोनों ही समान रूप से महत्वपूर्ण हैं। गाँधी पर मधु किश्वर ने लेख में लिखा है कि उन्होंने महिलाओं को सार्वजनिक जीवन में एक नया आत्मसम्मान,एक नया विश्वास और एक नई आत्मछवि दिलाई। राष्ट्रीय आंदोलन में गांधीजी के आने से राष्ट्रीय स्तर पर महिलाओं के प्रति सोच बदली। भारत के स्वतंत्रता संघर्ष में जितना योगदान पुरुषों का है उतना ही महिलाओं का और महात्मा गाँधी ने इस बराबरी कही तथा महिलाओं को एक वस्तु ना मान कर उन्हें एक जागरूक नागरिक और भाग्य निर्माता के रूप में देखा।